International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

छत्तीसगढ़ राज्य के दल्ली–राजहरा खनिक नगर में आप्रवास के कारणों का स्थानिक–कालिक विश्लेषण

धनवंत्री एवं सरला शर्मा

शोध छात्रा, भूगोल अध्ययनशाला, पंड़ित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छ.ग.
सेवानिवृत्त प्राध्यापक, पंड़ित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छ.ग.

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख खनिक नगर दल्ली–राजहरा में होने वाले आप्रवास के उत्तरदायी कारकों का स्थानिक–कालिक एवं लिंगानुसार विस्तृत विश्लेषण किया गया। जनसंख्या प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों में आकर्षण एवं अपकर्षण दोनों ही कारकों का आपस में घनिष्ठ सहसम्बंध होता है, जिसमें अन्तर करना संभव ही नहीं, अपितु कठिन कार्य है। आकर्षण के कारण प्रवासी के गन्तव्य क्षेत्र में तथा अपकर्षण के कारण जहाँ से प्रवास होता है, के क्षेत्र में क्रियाशील होते है, इस प्रकार किसी क्षेत्र के प्रवास प्रक्रिया में आकर्षण और अपकर्षण के कारकों की उपस्थिति के साथ–साथ दोनों कारकों की प्रभावशीलता भी विशेष महत्व रखती है, जिसमें अन्तर करना मुश्किल होता है।

शब्द कुंजी: दल्ली–राजहरा खनिक नगर, आप्रवास के कारण, स्थानिक–कालिक विश्लेषण, लिंगानुसार विश्लेषण।

प्रस्तावना

प्रवास प्रक्रिया में स्थान विशेष तथा व्यक्ति विशेष से इतने अधिक सम्बंध होते हैं कि इस प्रक्रिया में योगदान देने वाले उद्देश्यों की व्याख्या करना अत्यन्त कठिन ही नहीं, अपितु बड़ी उलझी हुई प्रक्रिया होती है। इस प्रकार प्रवास प्रक्रिया के उत्तरदायी कारकों को विश्लेषित करना एवं परस्पर अन्तर सम्बंधों को समझना एक कठिन प्रक्रिया होती है। वर्तमान समय में प्रवास में औद्योगिकीकरण, प्रौद्योगिक प्रगति, नगरीयकरण, सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन प्रमुख उत्तरदायी कारक रहे है। इसके अलावा क्षेत्रीय विकास की विषमताएँ, राजनीतिक घटनाएं, युद्ध एवं प्राकृतिक प्रकोप भी व्यक्ति के प्रवास को सामयिक एवं क्षेत्रीय आधार पर समय–समय पर प्रभावित करते रहते है। इस प्रकार जहाँ आकर्षण के कारक व्यक्ति के प्रवास को धनात्मक स्वरूप में प्रभावित करते है, वहीं अपकर्षण के कारक व्यक्ति के प्रवास को ऋणात्मक स्वरूप में प्रभावित करते है (ली 1970, पृ.20)। डेविस (1974, पृ. 97) ने 19वीं सदी से पहले यूरोप में जनसंख्या दाब अतिशय नहीं था, जिससे मात्र कुछ लोग ही बाहर प्रवास के इच्छुक थे, पर 1820 से 1930 की अवधि में बड़ी संख्या में प्रवास हुआ। वर्तमान समय में नगरीय क्षेत्रों में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों की अधिक सक्रियता के कारण नगर, ग्रामीण आप्रवासियों की आकर्षण का केन्द्र बिंदु है (देसाई, 1971)। किसी क्षेत्र में आने वाले प्रवासियों में वहाँ पर लम्बी अवधी से रहने वाले लोगों की अपेक्षा पुनः प्रवास की सम्भावनाएँ अधिक होती हैं (मोरिसन,1967, पृ. 553–61)।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के दल्ली–राजहरा खनिक नगर में आप्रवास के कारण एवं आप्रवास के सामाजिक कारण ,आर्थिक कारण एवं अन्य कारणों का स्थानिक–कालिक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

विधि तंत्र

प्रवास एक बहुआयामी घटना है, जो क्षेत्र विशेष की जनसंख्या को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करता है एवं क्षेत्र संरचना में परिवर्तन करता है। प्रस्तुत अध्ययन मूलतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। दल्ली–राजहरा नगर पालिका 27 वार्डो में विभक्त है। जिसमें नगर के प्रत्येक वार्ड से 10 प्रतिशत परिवारों का स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। इस प्रकार दल्ली–राजहरा नगर पालिका से 906 आप्रवासी परिवार चयनित हुए। चयनित आप्रवासी परिवारों से आप्रवासियों के प्रवास के कारणों सम्बंधित जानकारी साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्राप्त की गयी।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान बदलते हुए परिवेश में जिस गति से नगरीकरण एवं औद्योगीकरण हुआ है उसी गति से कच्चेमाल प्राप्ति हेतु खनन क्षेत्रों में खनिक नगरों का विकास हुआ है, जो क्षेत्र के आर्थिक विकास प्रक्रम का सूचक है। दल्ली–राजहरा छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिला

में एक नगरपालिका है, जो प्रमुख लौह अयस्क खनन क्षेत्र के रुप में विकसित है। दल्ली–राजहरा नगर 17.12 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। दल्ली पहाड़ की समुद्र तल से ऊँचाई 625 मीटर एवं दल्ली–राजहरा नगर की ऊँचाई 445 मीटर है। यह नगर जिला मुख्यालय बालोद से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दल्ली–राजहरा नगर दक्षिण–पूर्वी–मध्य रेलवे मंडल के अंतर्गत आता है, जो रायपुर से भिलाई, दुर्ग, बालोद, दल्ली–राजहरा, भानुप्रतापपुर, केवटी, अंतागढ़ से जुड़ा हुआ है, दल्ली–राजहरा से रावधाट रेलमार्ग प्रस्तावित है।

आप्रवास के कारण

व्यक्तियों में प्रवास का मुख्य कारण केवल जैविक ही नही है, अपितु सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक भी है (वासु, 2001)। वर्तमान में महिलाओं द्वारा विशेषकर उनकी पढ़ाई के लिए स्वतंत्र प्रवास तथा सामाजिक स्थिति के संबंध में रोजगार प्रवास अधिक होते है (गुप्ता 1990)। दल्ली–राजहरा एक खनिक नगर होने के कारण आप्रवासियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा। वर्ष 1958–59 में दल्ली–राजहरा खनिक नगर में उत्खनन का कार्य प्रारंभ होने के साथ–साथ यहाँ नगरीय सुविधाओं एवं विकास में क्रमिक परिवर्तन संभव हुए, जिसमें आप्रवासियों को प्रवास के लिए उत्प्रेरित किया। इस प्रकार वर्ष 1978 में दल्ली–राजहरा एक खनिक नगर के रूप में स्थापित हुआ, जिससे यहाँ प्रशासनिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, व्यापारिक एवं अन्य आर्थिक गतिविधियाँ उन्नत एवं समृद्ध हुई, जिन्होंने दल्ली–राजहरा खनिक नगर के आकर्षण को सशक्त किया। वर्ष 2021 में चयनित परिवारों में 53.58 प्रतिशत व्यक्ति आप्रवासी व्यक्ति है। इन आप्रवासी व्यक्तियों में 21.09 व्यक्ति सामाजिक कारणों से, 77.90 व्यक्ति आर्थिक कारणों से तथा 1.01 व्यक्ति अन्य कारणों से आप्रवासित हुए। इस प्रकार नगर में आप्रवासियों का प्रमुख आकर्षण नगर की आर्थिक संरचना रहीं। कुल आप्रवासी पुरुषों (93.01%) एवं महिलाओं (68.44%) दोनों में जहाँ आर्थिक कारक अधिक प्रबल रहे, वहीं अन्य कारकों का प्रभाव न्यूनतम रहा, तथापि सामाजिक गतिशीलता में जहाँ महिलाओं (30.70%) का पुरुषों (5.73%) से छःगुणा अधिक रहा। वहीं महिलाओं की गतिशीलता 29.05% पुरुषों से नौ गुणा अधिक रही। इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता में जहाँ महिला आप्रवासियों की अधिकता रही, वहीं पारिवारिक गतिशीलता पुरुष एवं महिलाओं का प्रतिशत में कम अन्तर प्राप्त हुआ। कुछ इसी प्रकार की प्रवास प्रवृत्ति शैक्षणिक गतिशीलता में भी दृष्टव्य हुई। दल्ली–राजहरा खनिक नगर के आप्रवास में सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण रहा। नगर की खनन उद्योग के विकास के साथ नगर की सुविधाओं में – विशेष कर शैक्षणिक एवं व्यापारिक में अधिक उन्नय का प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिक गतिशीलता की मात्रा एवं दिशा को निर्धारित करने में अधिक सक्षम रहा। खनन उद्योग के विकास के साथ–साथ खनन उद्योग में संलग्न कर्मियों के आवासीय सुविधाओं की उपलब्धता एवं प्रशासनिक स्तर पर भी आवासीय सुविधाओं की उपलब्धाता ने नगर के आप्रवास को न केवल आकर्षित किया, अपितु औद्योगिक आकर्षण प्रवास को सशक्त करने में अधिक उत्तरदायी कारक रहे। इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए, नगर के आप्रवास के कारणों को तीन वर्गों – सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य कारकों के संदर्भ में पृथक–पृथक विश्लेषित किया गया।

सामाजिक कारक

किसी भी क्षेत्र के प्रवास में सामाजिक गतिशीलता विशेष महत्व रखती है। भारतीय जनसंख्या का संचरण में वैवाहिक एवं पारिवारिक गतिशीलता महिलाओं के प्रवास में विशेष महत्व रखती है। डेविस (1951, पृ. 107) के अनुसार भारत में सामाजिक प्रथाओं के कारण स्त्रियों के प्रवास की मात्रा काफी ऊँची है। जबकि भारतीय जनसंख्या का संचरण निम्न माना जाता है। प्रवासियों की सामाजिक गतिशीलता प्रवास की मात्रा एवं दिशों के निर्धारण में विशेष महत्व रखती है। इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता के कारण आप्रवासियों में लिंगपरता पर स्त्रियों की संख्या जहाँ विशेष महत्व रखती है, वहीं युवा वर्ग की सक्रियता प्रवास की इच्छा एवं मात्रा के निर्धारण में अधिक सक्रिय होती है। दल्ली–राजहरा खनिक नगर के सामाजिक गतिशीलता पर पारिवारिक, वैवाहिक एवं शैक्षणिक गतिशीलता के प्रभाव को विश्लेषित किया गया है। नगर के कुल आप्रवास में 21.09% प्रवास सामाजिक गतिशीलता का प्रतिफल है, जिसमें 85.36% सामाजिक प्रवास वैवाहिक गतिशीलता के कारण किए गए, जबकि 14.23% प्रवास पारिवारिक गतिशीलता एवं 0.42 प्रवास शैक्षणिक गतिशीलता का परिणाम है। नगर के सामाजिक आप्रवास में जहाँ महिलाओं का प्रतिशत (30.70%) पुरुष आप्रवासियों (5.73%) से छःगुणा अधिक रहा, जो सामाजिक गतिशीलता का परिणाम है। चूंकि दल्ली–राजहरा में लौह–खनन उद्योग विकसित हुआ है। इसलिए यहाँ के सामाजिक प्रवास में निम्न सामाजिक स्तर के लोगों की प्रधानता रही है, जो आर्थिक दृष्टि से अकुशल श्रमिक एवं अल्पशिक्षित व्यक्ति होते हैं, जिनमें परिवार सहित प्रवास की प्रवृत्ति अधिक होती है। नगर में सामाजिक कारणों से जहाँ वैवाहिक गतिशीलता (94.63%) में महिलाओं की प्रधानता रही, वहीं पारिवारिक गतिशीलता (92%) एवं शैक्षणिक गतिशीलता (2%) में पुरुषों की गतिशीलता अपेक्षाकृत अधिक रही। सामान्यतः भारतीय परिवेश में विवाह के उपरांत स्त्रियों को पति के घर प्रवासित होना पड़ता है, जिसके कारण भारत में भारतीय प्रवास में महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से अधिक होता है, जो सामाजिक प्रवास की मात्रा और दिशा के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके विपरित निम्न आर्थिक स्तर एवं अशिक्षित परिवारों में पारिवारिक गतिशीलता अधिक होता है। चूंकि दल्ली–राजहरा खनन उद्योग के रूप में विकसित हुआ, जहाँ अकुशल श्रमिकों का प्रवास अधिक हुआ, जिसके कारण पारिवारिक

गतिशीलता में पुरुषों की अधिकता रही। जबकि महिलाओं द्वारा पारिवारिक गतिशीलता, पारिवारिक सदस्य होने के नाते हुई। नगर में उच्च शैक्षणिक संस्थान की कमी के कारण शैक्षणिक गतिशीलता में न्यूनतः रही।

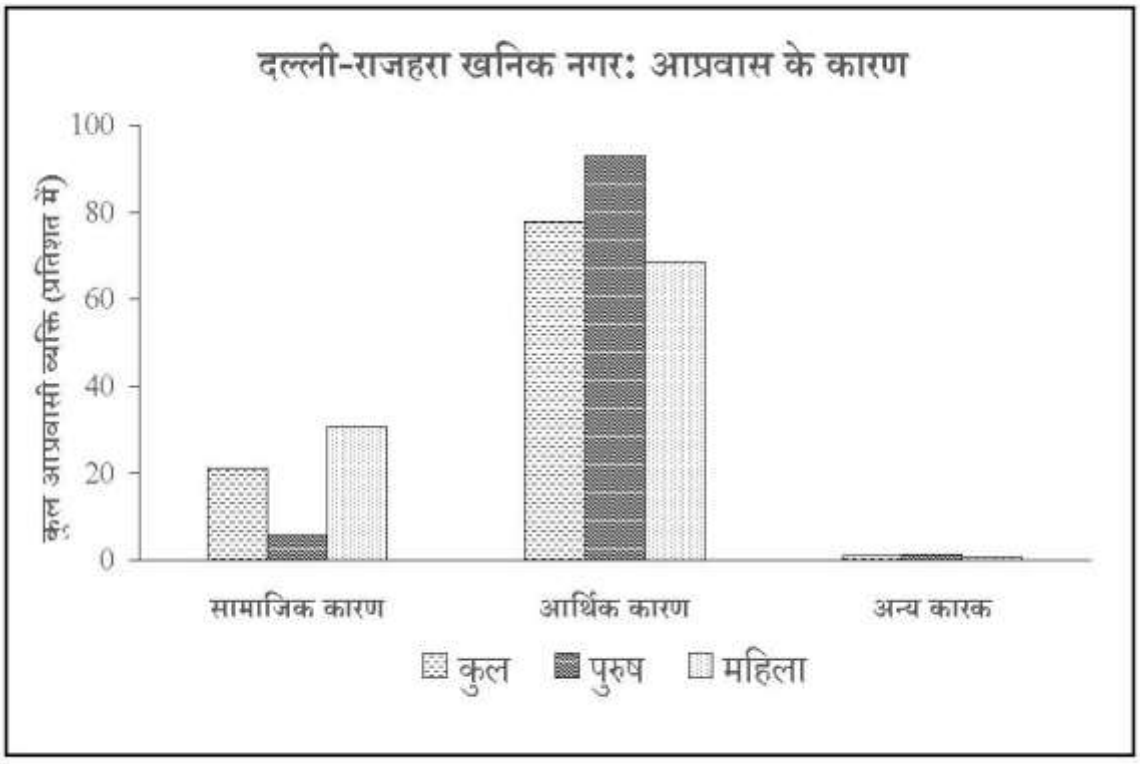
सारणी 01: दल्ली–राजहरा खनिक नगरः– आप्रवास के कारण

आप्रवास के कारण	कुल आप्रवासी					
	कुल	%	पुरूष	%	महिला	%
(1) सामाजिक कारण	**478**	**21.09**	**50**	**5.73**	**428**	**30.70**
पारिवारिक गतिशीलता	68	14.23	46	92	22	5.14
वैवाहिक गतिशीलता	408	85.36	3	6	405	94.63
शैक्षणिक गतिशीलता	2	0.42	1	2	1	0.23
(2) आर्थिक कारण	**1766**	**77.90**	**812**	**93.01**	**954**	**68.44**
लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर	703	39.81	344	42.36	359	37.63
अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के	110	6.23	46	5.67	64	6.71
रोजगार का स्थानांतरण	953	53.96	422	51.97	531	55.66
(3) अन्य कारक– प्राकृतिक विपदा	**23**	**1.01**	**11**	**1.26**	**12**	**0.86**
योगः–	**2267**	**100**	**873**	**100**	**1394**	**100**

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2021

आर्थिक कारण

व्यापारिक एवं औद्योगिक नगरों के प्रवास की मात्रा एवं दिशा के निर्धारण में सामाजिक एवं आर्थिक कारक विशेष महत्वपूर्ण होते है डेविस (1951)। किसी क्षेत्र के औद्योगिक प्रवास में उद्योग के विकास एवं प्रकृति का विशेष महत्व होता है। बड़े उद्योगों की तुलना में खनिक उद्योगों में जहाँ व्यक्तियों का प्रवास कम होता है, वहीं खनिक उद्योगों के धीमी विकास गति आप्रवासियों के आकर्षण को कम करने में अधिक महत्वपूर्ण होते है। तथापि खनिक नगरों के अकुशल श्रमिकों के आकर्षण के प्रमुख केन्द्र बिंदु होते है। खनिक नगरों के विकास एवं विकास के साथ–साथ नगरीय सुविधाओं में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। जिससे तृतीयक सेवाएं उन्नत एवं समृद्ध होती है, जो जनसंख्या को आप्रवास के लिए उत्प्रेरित करती है। इस प्रकार नगर के नगरीय विकास के साथ–साथ आवागमन के साधनों का विकास में दूरस्त क्षेत्रों की जनसंख्या भी आर्थिक गतिशीलता में प्रवृत्त होती है। दल्ली–राजहरा नगर के कुल आप्रवास का (77.90%) प्रवास आर्थिक गतिशीलता में प्रतिफल है। कुल आर्थिक गतिशीलता के प्रवास में (53.96%) प्रवास रोजगार के स्थानांतरण स्वरूप हुए जबकि (39.81%) प्रवास लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर के तहत किए गए। इसके विपरीत मात्र (6.33%) आप्रवास अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के उद्देश्य से किए गए। आर्थिक गतिशीलता में महिलाओं (68.44%) की तुलना में पुरुषों (93.01%) की सहभागिता अपेक्षाकृत अधिक रही, तथापि पुरुष–महिला के लिंगभेद कम प्राप्त हुआ। तुलनात्मक दृष्टि से नगर की आर्थिक गतिशीलता में रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव पुरुष (51.97%) एवं महिलाओं (55.66%) में अधिक रहा, तथापि पुरुषों की तुलना में महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। इसके विपरीत लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर के तहत महिलाओं (37.63%) की तुलना में पुरुषों का प्रतिशत (42.36%) अपेक्षाकृत अधिक रहा। जबकि अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के तहत प्रवास में पुरुषों (5.67%) की तुलना में महिलाओं (6.71%) का प्रतिशत अधिक रहा। नगर के आर्थिक गतिशीलता के उक्त तीनों स्वरूपों में महिला–पुरुषों के प्रवास में कम अन्तर दृष्टव्य हुआ, जो निम्न आर्थिक स्तर एवं निम्न साक्षरता के पारिवारिक स्थानांतरण का परिणाम है, जिसमें अकुशल श्रमिक अधिक होते हैं।



अन्य कारक

किसी भी क्षेत्र के प्रवास में प्राकृतिक विपदा प्रवास के महत्वपूर्ण कारक होते हैं। बालोद जिले के गुरूर और डौण्डी लोहारा क्षेत्र कृषि की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्र है। जहाँ सिंचित क्षेत्रों की कमी एवं अन्य रोजगारों की अनुपलब्धता क्षेत्र के विकर्षण का उत्प्रेरक कारक रहे। वहीं दल्ली–राजहरा नगर खनन उद्योग का विकास में रोजगार की उपलब्धता श्रमिक परिवारों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बना। इस दृष्टि से नगर के कुल आप्रवास का मात्र (0.01%) आप्रवास प्राकृतिक विपदा के कारण किये गये, जिसमें महिला (0.86%) एवं पुरुष (1. 26%) क्षेत्र का प्रतिशत सामान्य रहा, तथापि पुरुषों की संख्या का प्रतिशत महिलाओं से अपेक्षाकृत अधिक रहा।

दल्ली–राजहरा खनिक नगर आप्रवास के कारणों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि नगर में जहाँ आर्थिक कारकों के प्रवास में पुरुषों की प्रधानता रही, वहीं सामाजिक गतिशीलता में महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। महिला–पुरुष के आर्थिक गतिशीलता में जहाँ रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव अधिक प्रबल रहा, वहीं सामाजिक गतिशीलता में वैवाहिक प्रवासियों महिलाओं का एवं पारिवारिक गतिशीलता में पुरुषों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। उक्त क्षेत्रों में सामाजिक आप्रवासों में जहाँ लिंगभेद अधिक रहा। वहीं शैक्षणिक गतिशीलता में लिंगभेद का प्रभाव न्यनतम रहा। नगर के आप्रवास में प्राकृतिक विपदा का प्रभाव सबसे कम रहा, जिसमें पुरुष–महिलाओं के प्रवास में लगभग समानता पायी गयी।

आप्रवास के कारणों का स्थानिक विश्लेषण

दल्ली–राजहरा खनिक नगर के आप्रवास के कारणों में स्थानिक विश्लेषण को तीन स्वरूपों में (1) जिले के अन्दर आप्रवास, (2) छ.ग. के अन्य जिले से आप्रवास एवं (3) भारत के अन्य राज्यों से आप्रवास, के तुलनात्मक स्वरूपों को विश्लेषित किया गया। नगर के कुल सामाजिक आप्रवास में 27.72% प्रवास जिले के आधार से एवं 20.77% छ.ग. के अन्य राज्यों से हुई है। जबकि 10.26% प्रवास भारत के अन्य राज्यों से किये गये। नगर के आप्रवास के स्थानिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रवासियों में सामाजिक गतिशीलता का सर्वाधिक प्रभाव वैवाहिक, गतिशीलता का रहा। नगर के तीनों स्थानिक प्रतिरूपों में वैवाहिक गतिशीलता छ.ग. के अन्य जिलों से प्रवासित व्यक्तियों (89.47%) में जहाँ अधिक रहा, वहीं भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित व्यक्तियों (62.75%) में अपेक्षाकृत कम रहा। जबकि जिले के अन्दर से प्रवासित व्यक्तियों में वैवाहिक गतिशीलता में (86.92%) अधिक रही। वैवाहिक गतिशीलता में स्थानिक विभेद अपेक्षाकृत कम रहा। इसके विपरीत नगर के पारिवारिक गतिशीलता में स्थानिक विभेदता (3.5गुणा) वैवाहिक गतिशीलता से अधिक पाया

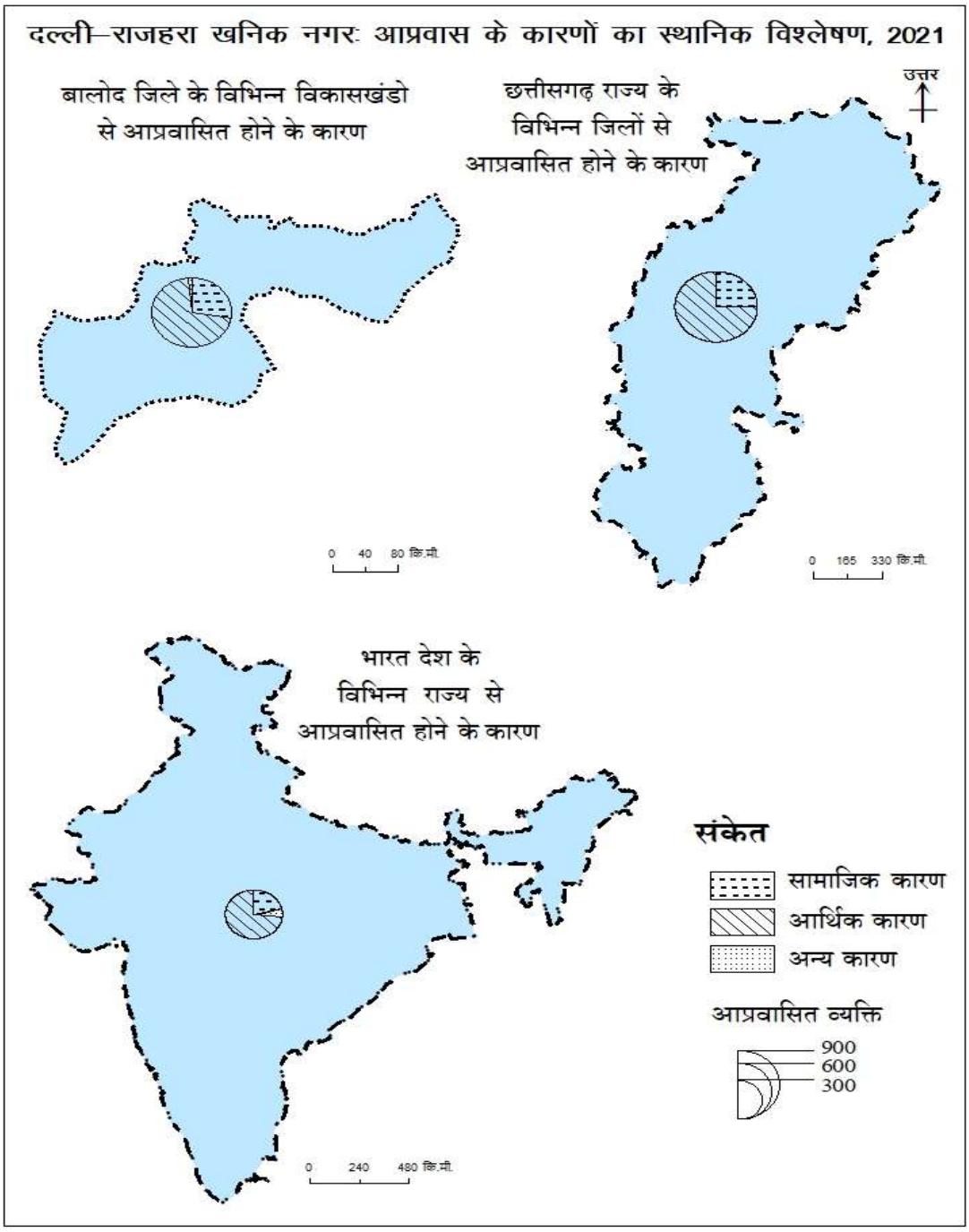
गया। नगर में भारत के अन्य राज्यों से अप्रवासित व्यक्तियों में पारिवारिक गतिशीलता (37.25%), जहाँ अधिक रहीं, वहीं छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों से प्रवासित व्यक्ति (9.47%) में पारिवारिक गतिशीलता कम प्राप्त हुई। इसके विपरीत नगर के शैक्षणिक गतिशीलता का जिले के अन्दर आप्रवास में एवं भारत के अन्य राज्यों में आप्रवासी व्यक्तियों में जहाँ अभाव रहा। वहीं छ.ग. के अन्य राज्यों के आप्रवास में इसका प्रतिशत न्यूनतम (1.05%) प्राप्त हुआ। इस प्रकार नगर के स्थानिक सामाजिक आप्रवास में वैवाहिक गतिशीलता का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा।

सारणी 02 :दल्ली–राजहरा खनिक नगरः– आप्रवास के कारणों का स्थानिक विश्लेषण 2021

आप्रवास के कारण	जिलें के अन्दर		छ.ग. के अन्य जिले से		भारत के अन्य राज्यों से	
	कुल	%	कुल	%	कुल	%
(1) सामाजिक कारण	**237**	**27.72**	**190**	**20.77**	**51**	**10.26**
पारिवारिक गतिशीलता	17	7.17	7	3.68	16	31.37
वैवाहिक गतिशीलता	220	92.83	181	95.26	35	68.63
शैक्षणिक गतिशीलता	0	0	2	1.05	0	0
(2) आर्थिक कारण	**606**	**70.88**	**722**	**78.91**	**438**	**88.13**
लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर	257	30.06	275	38.09	171	39.04
अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के	32	3.74	20	2.77	58	13.24
रोजगार का स्थानांतरण	317	37.08	427	59.14	209	47.72
(3) अन्य कारक	**12**	**1.40**	**3**	**0.33**	**8**	**1.61**
प्राकृतिक विपदा	12	1.40	3	100	8	100
योगः–	**855**	**100**	**915**	**100**	**497**	**100**

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2021

नगर के आप्रवास के स्थानिक वितरण में आर्थिक गतिशीलता की भूमिका महत्वपूर्ण रही। चूंकि दल्ली–राजहरा खनिक उद्योग के रूप में उन्नत हुआ, इसलिए यहाँ रोजगारपरक उपलब्धता, रोजगार में स्थानांतरण एवं अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव आप्रवासियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बिंदु रहा। स्थानिक दृष्टि से नगर के कुल आप्रवास का (70.88%) आप्रवास जिले के अन्दर के आप्रवास में (78.91%), छ.ग. के अन्य जिले के आप्रवास से एवं (88.13%) आप्रवास भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित व्यक्तियों द्वारा किए गए। इस प्रकार नगर के आर्थिक गतिशीलता में भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित व्यक्तियों की जहाँ अधिकता रही, वही जिले के अन्दर से आप्रवासित व्यक्तियों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम रहा। नगर में स्थानिक गतिशीलता के तहत रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव तीनों प्रतिरूपों पर अपेक्षाकृत अधिक रहा, तथापि रोजगार के स्थानांतरण द्वारा आप्रवासित व्यक्तियों का सर्वाधिक प्रतिशत छ.ग. के अन्य जिलें से प्रवासित व्यक्तियों (59.14%) में अधिक एवं भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित व्यक्तियों (47.72%) में कम दृष्टव्य हुआ। इस प्रकार रोजगार के स्थानांतरण का स्थानिक प्रतिरूपों पर कम विभेद प्राप्त हुआ। इसके विपरीत लाभदायक रोजगारके श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव का सर्वाधिक प्रतिशत (42.41%) जिले के अंदर आप्रवास में एवं न्यूनतम प्रतिशत (38.09%) छ.ग. के अन्य जिले के प्रवास में दिखाई दिया। इस प्रकार लाभदायक रोजगारक के श्रेष्ठ अवसर का स्थानिक प्रतिरूपों पर प्रवास विभेद कम रहा। नगर के आर्थिक गतिशीलता पर अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव यद्यपि कम रहा, तथापि इसका सर्वाधिक प्रभाव भारत के अन्य राज्यों से प्रवासित व्यक्तियों (13.24%) में जहाँ अधिक रहा, वहीं छ.ग. के अन्य जिले के आप्रवास (2.77%) में कम दिखाई दिया।



इस प्रकार अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के प्रवास में स्थानिक विभेद सर्वाधिक (5 गुणा) प्राप्त हुआ। इस प्रकार आर्थिक गतिशीलता में लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर एवं अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव भारत के अन्य राज्यों में जहाँ अधिक रहा, वहीं रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव जिले के अन्दर एवं छ.ग. के अन्य राज्यों के प्रवासियों पर अधिक दिखाई दिया। इसका कारण दल्ली–राजहरा खनिक नगर के उन्नयन के लिए प्रशासनिक एवं व्यापारिक स्थानांतरण की भूमिका अधिक रही, जिसके तहत कुशल एवं अकुशल श्रमिकों के प्रवास का मार्ग प्रशस्त हुआ। वहीं भारत के अन्य राज्यों के आप्रवास पर नगर के प्रशासनिक स्तर एवं व्यावसायिक स्तर के विकास का प्रभाव अधिक रहा।

नगर के आप्रवास के अन्य कारक में प्राकृतिक विपदा विशेष उल्लेखनीय रहा। नगर के आप्रवास में प्राकृतिक विपदा के तहत किए गये प्रवास का सर्वाधिक प्रवास भारत के अन्य राज्यों से किए गए प्रवास (1.61%) में जहाँ अधिक रहा, वहीं छ.ग. के अन्य जिलों के

आप्रवास में इसका प्रतिशत न्यूनतम (0.33%) प्राप्त हुआ। इस प्रकार प्राकृतिक विपदा के तहत हुए आप्रवास में स्थानिक विभेद कम रहा। नगर के प्राकृतिक विपदा के प्रवास में अकाल ग्रस्त क्षेत्र से आप्रवासित व्यक्तियों की प्रमुखता रही। जिले के अन्दर प्राकृतिक विपदा में गुरूर एवं डौण्डी लोहारा के सूखाग्रस्त क्षेत्र से आप्रवास हुए, वहीं भारत के अन्य राज्यों से आप्रवास में उड़ीसा एवं बिहार के अकालग्रस्त क्षेत्र का प्रभाव अधिक रहा।

आप्रवास के कारणों का लिंगानुसार स्थानिक विश्लेषण

किसी भी स्थान के प्रवास प्रक्रिया पर स्थान विशेष तथा व्यक्ति विशेष के साथ ज्यादा सम्बद्धता होती है। तथापि प्रवास में आर्थिक लाभ के साथ सामाजिक प्रथा का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। भारत की सामाजिक प्रथा विशेषकर महिलाओं के वैवाहिक प्रवास को अधिक प्रश्रय देती है, जिसके कारण भारतीय जनसंख्या प्रवास में स्त्रियों के प्रवास की मात्रा न केवल उच्च होती है, अपितु प्रवास की मात्रा और दिशा के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दल्ली–राजहरा नगर के प्रवास की मात्रा के निर्धारण में लिंगभेद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दिया। नगर के आप्रवास के सामाजिक गतिशीलता में तीनों स्थानिक प्रतिरुपों पर महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से अधिक रहा, तथापि सामाजिक गतिशीलता के तहत महिलाओं का सर्वाधिक प्रतिशत जिले के अन्दर के आप्रवास (39.56%) में था न्यूनतम प्रवास भारत के अन्य राज्यों के आप्रवास (13.78%) में प्राप्त हुआ। जबकि सामाजिक गतिशीलता में पुरुषों का अधिक प्रतिशत जिले के अन्दर के प्रवास (7.32%) में रहा। इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता के आप्रवास में पुरुष एवं महिला दोनों का अधिक प्रतिशत जिले के अन्दर आप्रवास में प्राप्त हुआ, जबकि सामाजिक गतिशीलता में पुरुष–महिला में सर्वाधिक लिंग भेद (7 गुणा) छ.ग. के अन्य जिले के आप्रवास में प्राप्त हुआ। सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत पारिवारिक गतिशीलता में पुरुषों का प्रतिशत तीनों स्थानिक प्रतिरूपों में जहाँ अधिक रहा, वहीं इसमें पुरुषों का सर्वाधिक प्रतिशत (95.65%) जिले के अन्दर के आप्रवास में प्राप्त हुआ, जबकि महिलाओं का उच्च प्रतिशत (20.51%) भारत के अन्य राज्यों के आप्रवास में प्राप्त हुआ। इस प्रकार पुरुष नगर में सर्वाधिक विभेद छ.ग. के अन्य जिले के पारिवारिक गतिशीलता पर दिखाई दिया। इसके विपरीत नगर के वैवाहिक गतिशीलता पर पुरुष–महिलाओं का लिंगभेद अपेक्षाकृत अधिक रहा। जबकि तीनों स्थानिक प्रतिरूपों में महिलाओं का प्रतिशत अधिक रहा, तथापि वैवाहिक गतिशीलता में उच्च प्रतिशत छ.ग. के अन्य जिलों के आप्रवास (96.57%) में दिखाई दिया। इसी प्रकार जिले के अन्दर वैवाहिक गतिशीलता में भी महिलाओं का प्रतिशत (95.79%) अधिक रहा। इस प्रकार छ.ग. के अंदर के दोनों स्थानिक आप्रवासों में महिलाओं के अधिक वैवाहिक प्रवास का कारण राज्य के अंदर एवं जिले के अंदर ही स्त्रियों के अधिक वैवाहिक संबंध स्थापित किया जाना है। सामाजिक प्रथा के अनुसार छ.ग. राज्य में आज भी स्त्रियों का विवाह निकटवर्ती गाँवों में जिले के अंदर अथवा राज्य के अंदर किये जाने का ही अधिक प्राथमिकता है। जिसके कारण नगर के आप्रवास में वैवाहिक गतिशीलता अधिक दिखाई दी। जबकि निम्न आर्थिक स्तर के परिवार में श्रमिक वर्गों की अधिकता होती है, जिसके कारण पुरुषों द्वारा पारिवारिक प्रवास अधिक किये गये हैं, जिसमें आश्रित वर्ग सम्मिलित रहते है। दल्ली–राजहरा खनिक नगर में शैक्षणिक विकास की अल्पता के कारण यहाँ शैक्षणिक गतिशीलता अत्यल्प रही। केवल छ.ग. जिले से ही पुरुष–महिला द्वारा शैक्षणिक प्रवास हुए, जबकि जिले के अंदर एवं भारत के अन्य राज्यों के आप्रवास के शैक्षणिक गतिशीलता का प्रभाव नगण्य रहा।

सारणी 03 : दल्ली–राजहरा खनिक नगरः– आप्रवास के कारणों का लिंगानुसार स्थानिक विश्लेषण 2021

आप्रवास के कारण	जिलें के अन्दर				छ.ग. के अन्य जिले से				भारत के अन्य राज्यों से			
	पुरूष	%	महिला	%	पुरूष	%	महिला	%	पुरूष	%	महिला	%
(A) सामाजिक कारण	**23**	**7.32**	**214**	**39.56**	**15**	**4.35**	**175**	**30.7**	**12**	**5.61**	**39**	**13.78**
पारिवारिक गतिशीलता	22	95.65	9	4.21	13	86.66	5	2.86	11	91.67	8	20.51
वैवाहिक गतिशीलता	1	4.35	205	95.79	1	6.67	169	96.57	1	8.33	31	79.49
शैक्षणिक गतिशीलता	0	0	0	0	1	6.67	1	0.57	0	0	0	0
(B) आर्थिक कारण	**281**	**89.49**	**325**	**60.07**	**330**	**95.65**	**392**	**68.77**	**201**	**93.93**	**237**	**83.75**
लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर	128	45.55	129	39.69	138	41.82	137	34.95	78	38.81	93	39.24
अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के	13	4.63	19	5.85	8	2.42	12	3.06	25	12.44	33	13.92

रोजगार का स्थानांतरण	140	49.82	177	54.46	184	55.76	243	61.99	98	48.76	111	46.84
(C) अन्य कारक '–प्राकृतिक विपदा	**10**	**3.18**	**2**	**0.37**	**0**	**0**	**3**	**0.53**	**1**	**0.47**	**7**	**2.47**
योगः–	**314**	**100**	**541**	**100**	**345**	**100**	**570**	**100**	**214**	**100**	**283**	**100**

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2021

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवार के भरण पोषण का दायित्व कार्यशील पुरुष पर होता है (मेहता, 1967, पृ. 50)। इस प्रकार परिवार के मुखिया की गतिशीलता पर उस आश्रित सभी सदस्यों, मुख्य रूप से पत्नी एवं बच्चों को भी गतिशील होना पड़ता है। किसी भी क्षेत्र के प्रवास में आर्थिक उद्देश्य अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, जिसमें पुरुषों की प्रधानता होती है। पुरुषों द्वारा रोजगार में स्थानांतरण या लाभदायी रोजगार के अवसर एवं अधिक आय उपार्जन के अवसर के फलीभूत अधिक गतिशीलता होती है। खनन उद्योग श्रमिक वर्गों के आकर्षण के अधिक केन्द्र बिंदु होती है, जहाँ अशिक्षित एवं अकुशल व्यक्ति द्वारा रोजगारपरक स्थानांतरण होते हैं, जिससे नगर की प्रवास की मात्रा एवं दिशा के निर्धारण में विशेष महत्व रखती है। नगर की आर्थिक गतिशीलता के तीनों प्रतिरूपों में यद्यपि पुरुषों का प्रतिशत अधिक रहा, तथापि पुरुष का अधिक प्रतिशत (95.65%) छ.ग. के अन्य जिले के आप्रवास में प्राप्त हुआ, जबकि महिलाओं की आर्थिक गतिशीलता का सर्वाधिक प्रतिशत भारत के अन्य राज्यों (83.75%) में प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि भारत के अन्य राज्यों के आप्रवास में पुरुषों का प्रतिशत (93.93%) अधिक प्राप्त हुआ, जिससे यहाँ के आप्रवास में लिंगभेद अपेक्षाकृत कम रहा। आर्थिक गतिशीलता के तहत लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव महिला–पुरुष दोनों पर लगभग समान दृष्टव्य हुआ। तथापि पुरुषों का प्रतिशत महिलाओं से अधिक रहा। तुलनात्मक दृष्टि से पुरुषों (45.55%) एवं महिला (39.59%) दोनों का अधिक प्रतिशत जिले के अंदर के आप्रवास में प्राप्त हुआ। जबकि पुरुषों का न्यूनतम प्रतिशत भारत के अन्य राज्यों के प्रवास (38.81%) में तथा महिलाओं का न्यूनतम प्रतिशत (34.95%) छ.ग. के अन्य राज्यों के आप्रवास में रहा। इसके विपरीत रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव पुरुषों (55.76%) एवं महिला (61.99%) का छ.ग. के अन्य जिले के आप्रवास पर अधिक प्राप्त हुआ, जबकि भारत के अन्य राज्यों के प्रवास में रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव पुरुष (48.76%) एवं महिला (46.84%) दोनों में अपेक्षाकृत कम दृष्टव्य हुआ। नगर के आप्रवास में अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव यद्यपि न्यूनरतम रहा, तथापि भारत के राज्यों के आपवास में पुरुष (12.44%), महिला (13.92%) दोनों में प्रवास का प्रतिशत अधिक रहा। जबकि इसका न्यूनतम प्रतिशत छ.ग. के अन्य राज्यों के प्रवास में पुरुष (2.42%), महिला (3. 06%) दोनों में कम दिखाई दिया। उल्लेखनीय है कि अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर में महिलाओं का प्रतिशत तीनों स्थानिक प्रतिरूपों में पुरुषों से अधिक रहा तथा पुरुष–महिला के प्रवास में लिंगभेद कम रहा, जो पारिवारिक स्थानांतरण का प्रतिफल है। नगर के आप्रवास में प्राकृतिक विपदा का प्रभाव यद्यपि अत्यल्प रहा, तथापि प्राकृतिक विपदा के तहत किये गये प्रवास में पुरुषों का अधिक प्रतिशत जिले के अंदर के आप्रवास में (3.18%) के प्रवास में प्राप्त हुआ। जबकि छ.ग. के अन्य जिले के प्रवास में प्राकृतिक विपदा का प्रभाव पुरुषों पर नगण्य रहा। इसी प्रकार प्राकृतिक विपदा के तहत महिलाओं का अधिक प्रवास (2.47%) हुआ, जोकि भारत के अन्य राज्यों से किया गया।

आप्रवास के कारणों का कालिक विश्लेषण

दल्ली–राजहरा खनिक नगर का विकास वर्ष (1956) से प्रारंभ हुआ, क्योंकि इस समय दल्ली–राजहरा की पहाड़ियों से लौह–अयस्क का खनन कार्य प्रारंभ हुआ। नगर के आसपास विभिन्न क्षेत्रों से वर्ष 1960 में राजहरा खदान, वर्ष 1965 में झरनदल्ली खदान, वर्ष 1971 में महामाया खदान, वर्ष 1978 में दल्ली खदान से लौह–अयस्क का खनन कार्य प्रारंभ हुआ, जिसको नगर के आर्थिक–सामाजिक विकास में जहाँ महत्वपूर्ण भूमिका रही, वहीं नगर आप्रवासियों का आकर्षण का केन्द्र बिंदु भी बन गया। इन्ही तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए दल्ली–राजहरा खनिक नगर के आप्रवास के कारणों को पाँच कालिक वर्गों में – वर्ष 1980 के पूर्व, वर्ष 1981 से 1990 तक, वर्ष 1991 से 2000 तक, वर्ष 2001 से 2010 तक एवं वर्ष 2011 से 2021 तक कालिक रूपों में विश्लेषित किया गया। नगर के कुल सामाजिक आप्रवास में 15.31% प्रवास वर्ष 1980 के पूर्व, 27.42% प्रवास वर्ष 1981 से वर्ष 1990 तक, 21.37% प्रवास वर्ष 1991 से 2000 तक, 22.61% प्रवास वर्ष 2001 से 2010 तक एवं 18.85% प्रवास 2011 से 2021 तक किए गए। नगर आप्रवास के कालिक विश्लेषण के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि प्रवासियों के सभी कालिक वर्गों के सामाजिक गतिशीलता का सर्वाधिक प्रभाव वैवाहिक गतिशीलता का रहा। तथापि नगर के कालिक प्रतिरूपों में वैवाहिक गतिशीलता का सर्वाधिक प्रभाव वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्षो में प्रवासित व्यक्तियों (94.10%) में रहा। वहीं वर्ष 2011 से 2021 में प्रवासित व्यक्तियों (69.57%) में वैवाहिक गतिशीलता का प्रभाव अपेक्षाकृत कम रहा। इस प्रकार वैवाहिक गतिशीलता में कालिक विभेद बहुत कम प्राप्त हुआ। इसके विपरीत नगर के पारिवारिक

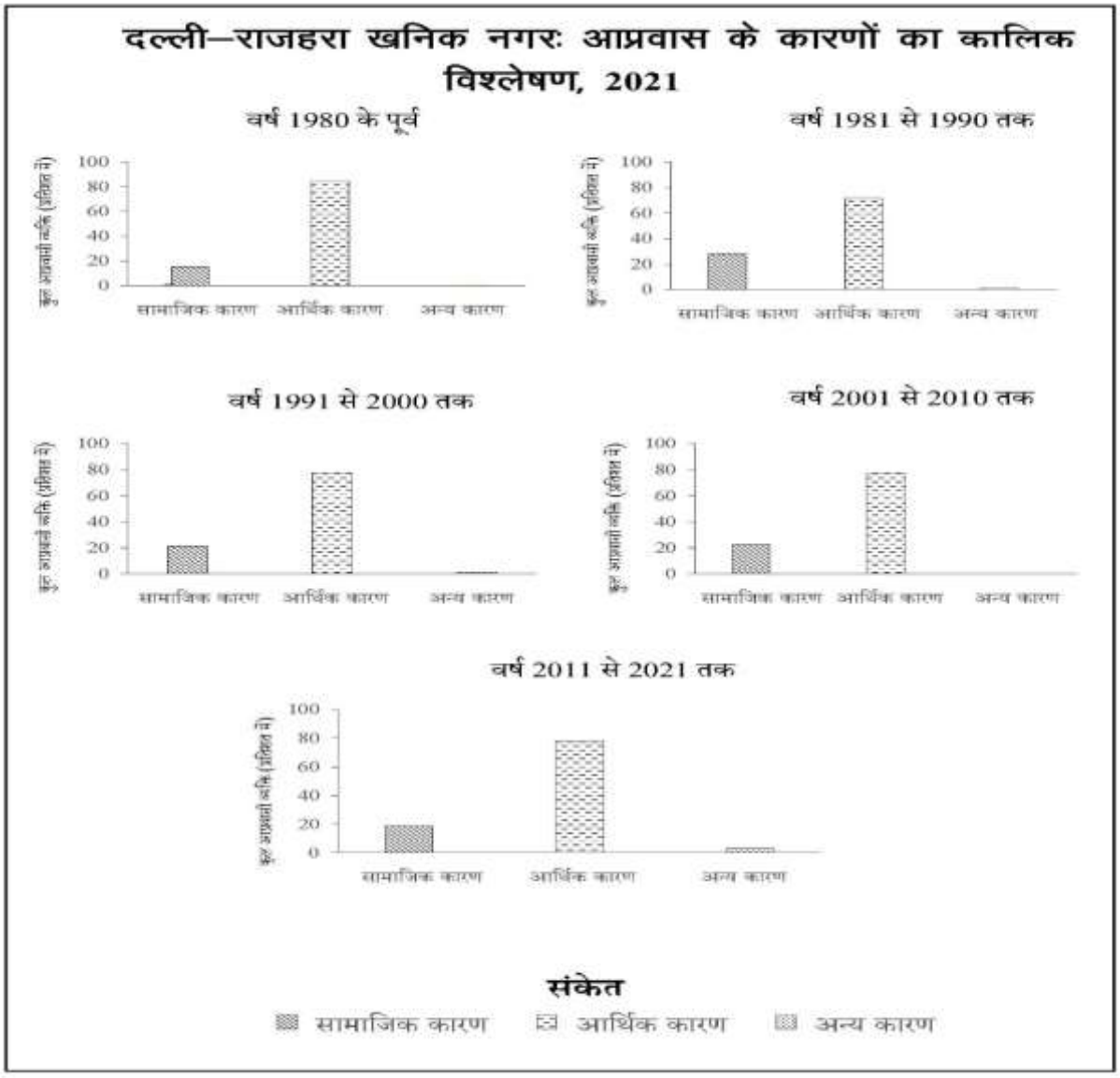
गतिशीलता का सर्वाधिक प्रभाव वर्ष 2011 से 2021 को कालिक वर्ष (30.43%) में एवं न्यूनतम प्रभाव वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष (5.90%) में प्राप्त हुआ। इस प्रकार वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ग एवं वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में पारिवारिक गतिशीलता में कालिक विभेद कम रहा। इसके विपरीत शैक्षणिक गतिशीलता का प्रभाव वर्ष 1991 से 2000 के कालिक वर्ष (1.79%) में अधिक रहा। यद्यपि वर्ष 1980 के पूर्व, 1990 तक एवं 2001 से 2021 तक शैक्षणिक गतिशीलता का प्रतिशत नगण्य रहा। इसका मुख्य कारण नगर में उच्चस्तर की शैक्षणिक सुविधाओं का धीमी गति से विकास होना है।

सारणी 04: दल्ली–राजहरा खनिक नगरः– आप्रवास के कारणों का कालिक विश्लेषण, 2021

आप्रवास के कारण	कालिक वर्ष									
	1980 के पूर्व		1981 से 1990 तक		1991 से 2000 तक		2001 से 2010 तक		2011 से 2021 तक	
	कुल	%	कुल	%	कुल	%	कुल	%	कुल	%
(A)सामाजिक कारण	**96**	**15.31**	**153**	**27.42**	**112**	**21.37**	**71**	**22.61**	**46**	**18.85**
पारिवारिक गतिशीलता	28	29.17	9	5.90	10	8.93	7	9.86	14	30.43
वैवाहिक गतिशीलता	68	70.83	144	94.10	100	89.28	64	90.14	32	69.57
शैक्षणिक गतिशीलता	0	0	0	0	2	1.79	0	0	0	0
(B) आर्थिक कारण	**528**	**84.21**	**399**	**71.51**	**405**	**77.29**	**243**	**77.39**	**191**	**78.28**
लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर	130	24.62	150	37.59	183	45.19	144	59.26	96	50.26
अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर के	32	6.06	31	7.77	34	8.40	6	2.47	7	3.66
रोजगार का स्थानांतरण	366	69.32	218	54.64	188	46.42	93	38.27	88	46.07
(C) अन्य कारक– प्राकृतिक विपदा	**3**	**0.48**	**6**	**1.08**	**7**	**1.34**	**0**	**0**	**7**	**2.87**
योगः–	**627**	**100**	**558**	**100**	**524**	**100**	**314**	**100**	**244**	**100**

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण, 2021

किसी भी क्षेत्र के विकास में आर्थिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। दल्ली–राजहरा नगर खनन उद्योग के रूप में विकसित हुआ, जिसके कारण आर्थिक क्रियाएं अधिक सक्रिय रही। नगर के विभिन्न कालिक वर्षो में यद्यपि आर्थिक गतिशीलता का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रही, वही कालिक विश्लेषण में (84.21%) आप्रवास का सर्वाधिक प्रतिशत वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में रहा, वहीं वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में गतिशीलता का प्रतिशत (71.51%) कम प्राप्त हुआ। नगर में आर्थिक गतिशीलता में कालिक वर्ग विभेद कम प्राप्त हुआ। रोजगार के स्थानांतरण में आप्रवासित व्यक्तियों का सर्वाधिक प्रभाव वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष (69. 32%) में एवं न्यूनतम प्रभाव वर्ष 2001 से 2010 तक के कालिक वर्ष (38.27%) में पाया गया। इसके विपरीत लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर के तहत वर्ष 2001 से 2010 तक के कालिक वर्ष (59.26%) में प्रवास अधिक एवं वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष (24. 62%) में आप्रवास की गतिशीलता का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम रहा। अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव वर्ष 1991 से 2000 के कालिक वर्ष (8.40%) में जहाँ अधिक रहा, वहीं वर्ष 2001 से 2010 के कालिक वर्ष (2.47%) में इसका प्रभाव न्यूनतम रहा। इस प्रकार वर्ष 1980 के पूर्व से 2000 तक सभी कालिक वर्षों में आर्थिक गतिशीलता अधिक रही, क्योंकि इन कालिक वर्षों में नगर में लौह–अयस्क खनन कार्य तीव्र गति से उन्नत हुआ था, जिससे आप्रवासी व्यक्तियों का नगर आप्रवास में आकर्षण बना रहा।



नगर के आप्रवास के कालिक विश्लेषण के अन्य कारकों में प्राकृतिक विपदा का प्रभाव वर्ष 2011 से 2021 तक के कालिक वर्ष (2.87%) में जहाँ अधिक रहा, वहीं वर्ष 1980 के पूर्व (0.48%) के कालिक वर्ष में न्यूनतम रहा। इस प्रकार नगर के विभिन्न कालिक वर्गों में आर्थिक गतिशीलता का प्रभाव जहाँ अधिक रहा, वहीं आर्थिक गतिशीलता में रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में, लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव 2001 के बाद के दोनों कालिक वर्षों में तथा अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव 1981 से 2000 तक के कालिक वर्षों के दोनों कालिक वर्षों में अपेक्षाकृत अधिक रहा। वहीं सामाजिक गतिशीलता का अधिक प्रभाव वर्ष 1981 से 1990 तक कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इस कालिक वर्ष में जहाँ वैवाहिक गतिशीलता उच्च रही, वहीं 2011 से 2021 के कालिक वर्ष में गतिशीलता उच्च पाया गया।

आप्रवास के कारणों का लिंगानुसार कालिक विश्लेषण

नगर के आप्रवास के कारणों के कालिक विश्लेषण में पुरुष–महिला के आप्रवास की मात्रा में कालिक विभेद स्पष्ट दिखाई देता है। नगर के सामाजिक गतिशीलता में यद्यपि सभी कालिक वर्षों में महिलाओं की प्रधानता रही है, तथापि सामाजिक गतिशीलता में महिलाओं का सर्वाधिक प्रतिशत (40.34%) वर्ष 1981 से 1990 तक के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इस कालिक वर्ष के बाद महिलाओं के प्रतिशत में क्रमशः कमी हुई, जबकि पुरुषों के सामाजिक गतिशीलता में वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष के बाद के कालिक वर्षों में जहाँ क्रमशः

कमी हुई, वहीं वर्ष 2011 से 2021 तक के कालिक वर्ष में वृद्धि (9.72%) की प्रवृत्ति पायी गयी। इस प्रकार महिलाओं के विभिन्न कालिक वर्षों में सामाजिक गतिशीलता में लिंग विभेद (10 गुणा) वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ, वहीं न्यूनतम विभेद वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ष (2.5 गुणा) प्राप्त हुआ। विभिन्न कालिक वर्षों में महिलाओं में पारिवारिक गतिशीलता का सर्वाधिक प्रतिशत जहाँ पुरुषों से कम रहा, वहीं इसका सर्वाधिक प्रतिशत (17.95%) वर्ष 2011 से 2021 तक कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इसके पुरुषों में पारिवारिक गतिशीलता का प्रभाव वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष एवं वर्ष 2001 से 2010 के कालिक वर्गों में जहाँ शत–प्रतिशत रहा, वहीं पुरुषों की पारिवारिक गतिशीलता का न्यूनतम प्रभाव वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष (77.78%) रहा, जो पुरुष का परिवार में अपेक्षाकृत अधिक आश्रित होने का प्रतिफल है, जिसमें वृद्ध एवं बच्चे सम्मिलित हैं। इसके विपरीत विभिन्न कालिक वर्षों में महिलाओं की वैवाहिक गतिशीलता में प्रधानता रही। वर्ष 1981 के पूर्व के कालिक वर्ष के बाद महिलाओं को वैवाहिक गतिशीलता में जहाँ क्रमशः वृद्धि हुई। वहीं 2001 के कालिक वर्षों में उत्तरोत्तर गिरावट की प्रवृत्ति दृष्टव्य हुई। महिलाओं की गतिशीलता का सर्वाधिक प्रतिशत (98.61%) जहाँ वर्ष 1981 से 1990 तक के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ, वहीं महिलाओं का न्यूनतम प्रतिशत (82.05%) वर्ष 2011 से 2021 तक के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इसके विपरीत पुरुषों के वैवाहिक गतिशीलता वर्ष 1980 के पूर्व एवं वर्ष 2001 के बाद के कालिक वर्षों में जहाँ नगण्य रहा, वहीं इसका उच्च प्रतिशत (22.22%) वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इस प्रकार विभिन्न कालिक वर्षों में वैवाहिक गतिशीलता के तहत नगर में शैक्षणिक गतिशीलता का प्रभाव वर्ष 1991 से 2000 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ, जहाँ पुरुष (9.09%) का प्रतिशत महिला आप्रवास (0.99%) के प्रतिशत से अधिक रहा।

नगर के विभिन्न कालिक वर्षों में अधिक गतिशीलता का प्रभाव में कालिक विभेद अधिक दृष्टव्य हुआ, जो नगर के विकास के साथ रोजगार के अवसरों की उपलब्धता एवं लाभादायक रोजगार के अवसरों की आकर्षणों के उतार चढ़ाव का परिणाम है। इस दृष्टि से नगर की विविध कालिक वर्षों में जहाँ वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष के बाद के कालिक वर्ष में जहाँ पुरुषों के प्रवास की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई, वहीं वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्षो में पुरुषों के आर्थिक गतिशीलता में कमी हुई। यद्यपि सभी कालिक वर्षों में पुरुषों की कालिक गतिशीलता महिला से अधिक रही, तथापि पुरुषों की आर्थिक गतिशीलता का सर्वाधिक प्रतिशत वर्ष 2001 से 2010 के कालिक वर्ष (96.49%) में प्राप्त हुई, जबकि पुरुषों का न्यूनतम प्रतिशत वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ष (90.28%) में प्राप्त हुआ। इसके विपरीत विभिन्न कालिक वर्षों में महिलाओं में आर्थिक गतिशीलता वर्ष 1980 के पूर्व से 1990 के कालिक वर्ष में जहाँ क्रमशः कम हुई, वहीं वर्ष 1991 से वर्ष 2021 तक के तीनों कालिक वर्ष में क्रमशः वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गयी। महिलाओं की आर्थिक गतिशीलता का उच्च प्रतिशत (79.20%) 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ, जबकि महिलाओं का न्यूनतम प्रतिशत (58.82%) वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इस प्रकार पुरुष महिलाओं के आर्थिक गतिशीलता में सर्वाधिक विभेद (35.21%) वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। आर्थिक गतिशीलता के तहत रोजगार का स्थानांतरण में पुरुष (65.37%) एवं महिला (72. 39%) दोनों का उच्च प्रतिशत वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। जबकि पुरुषों का न्यूनतम प्रतिशत (37.27%) वर्ष 2001 से 2010 तक के कालिक वर्ष एवं महिलाओं का न्यूनतम प्रतिशत (33.33%) वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इस प्रकार रोजगार के स्थानांतरण का न्यूनतम लिंगभेद वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ । इसका कारण वर्ष 1980 के पूर्व खनन उद्योग के उत्तरोत्तर विकास के कारण रोजगार के स्थानांतरण में महिला–पुरुष की सहभागिता लगभग बराबर रही। उसके बाद के कालिक वर्षों में महिला एवं पुरुष दोनों में रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव क्रमशः कम होता गया, तथापि वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ष में पुनः महिला–पुरुष दोनों के रोजगार के स्थानांतरण के प्रभाव में वृद्धि हुई। इस प्रकार रोजगार के स्थानांतरण का न्यूनतम लिंगभेद (1.80%) वर्ष 2001 से 2010 के कालिक वर्ष एवं अधिकतम (19%) वर्ष 1981 से 1990 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। नगर के विकास में लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव क्रमशः वृद्धि हुई, तथापि वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ष में पुनः लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर के प्रभाव में कमी की प्रवृत्ति पाई गयी। लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव पुरुष एवं महिलाओं के प्रतिशत में परिवर्तन की प्रवृति लगभग सामान्य रही, तथापि लाभदायक रोजगार के श्रेष्ठ अवसर के तहत पुरुष (60%) एवं महिला (58.65%) दोनों में प्रवास का उच्च प्रतिशत 2001 से 2010 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ, जबकि न्यूनतम प्रतिशत पुरुष (25. 11%) एवं महिला (24.24%) दोनों में वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में लिंगभेद न्यूनतम रहा, जबकि लिंगभेद का अधिकतम प्रतिशत (13.2%) वर्ष 1991 से 2000 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। नगर के उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ रोजगार के अवसर की उपलब्धता में भी वृद्धि होती है, जिसका प्रभाव पुरुष–महिला के कालिक प्रवास पर स्पष्ट दिखाई दिया। इसके विपरीत अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसरों का प्रभाव वर्ष 1981 के बाद जहाँ पुरुषों में क्रमशः कम होता गया, वहीं महिलाओं में प्रवास में क्रमशः वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गयी। अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का अधिकतम पुरुष प्रवास (9.52%) वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। वहीं महिलाओं का उच्च प्रतिशत (13.83%) 1991 से 2000 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। इस कालिक वर्ष के बाद महिला के प्रवास में तीव्र कमी हुई। महिलाओं का न्यूनतम प्रवास (2.26%), जहाँ 2001 से 2010 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ, वहीं पुरुषों का न्यूनतम प्रवास (1.54%) वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। अधिक आय उपार्जन के कालिक वर्ष में लिंगभेद का न्यूनतम

(0.47%) वर्ष 2001 से 2010 के कालिक वर्ष में एवं अधिकतम कालिक लिंगभेद (10.14%) वर्ष 1991 से 2000 के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। विभिन्न कालिक वर्षों के आर्थिक गतिशीलता में यद्यपि लिंगभेद कम रहा तथापि विविध कालिक वर्षों में पुरुष–महिला के प्रवास की मात्रा पर रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव जहाँ उल्लेखनीय रहा, वहीं अधिक आय उपार्जन के श्रेष्ठ अवसर का प्रभाव पुरुष–महिला के प्रवास पर अपेक्षाकृत कम रहा।

नगर के विभिन्न कालिक वर्षों में अन्य कारक में प्राकृतिक विपदा से गतिशीलता का प्रभाव कम रहा। प्राकृतिक विपदा में पुरुषों का सर्वाधिक प्रतिशत (2.56%) वर्ष 1991 से 2000 तक कालिक वर्ष में एवं महिलाओं का अधिकतम प्रतिशत (4.07%) वर्ष 2011 से 2021 तक के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। वहीं पुरुष (0.79%) एवं महिला (0.27%) के प्रवास में कालिक लिंगभेद, प्रवास का न्यूनतम प्रतिशत वर्ष 1980 के पूर्व के कालिक वर्ष में प्राप्त हुआ। प्राकृतिक विपदा का प्रभाव वर्ष 2001 के बाद कालिक वर्षों में न्यूनतम रहा, वहीं पुरुष–महिला में कालिक प्राकृतिक विपदा के प्रवास में कालिक विभेद वर्ष 2011 से 2021 के कालिक वर्ष में सर्वाधिक रहा, जबकि 2001 से 2010 के कालिक वर्ष में कालिक लिंगभेद का अभाव रहा।

निष्कर्ष

दल्ली–राजहरा खनिक नगर आप्रवास के कारणों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि नगर में जहाँ आर्थिक कारकों के प्रवास में पुरुषों की प्रधानता रही, वहीं सामाजिक गतिशीलता में महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। महिला–पुरुष के आर्थिक गतिशीलता में जहाँ रोजगार के स्थानांतरण का प्रभाव अधिक प्रबल रहा, वहीं सामाजिक गतिशीलता में वैवाहिक प्रवासियों महिलाओं का एवं पारिवारिक गतिशीलता में पुरुषों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक रहा। उक्त क्षेत्रों में सामाजिक आप्रवासों में जहाँ लिंगभेद अधिक रहा। वहीं शैक्षणिक गतिशीलता में लिंगभेद का प्रभाव न्यनतम रहा। नगर के आप्रवास में प्राकृतिक विपदा का प्रभाव सबसे कम रहा, जिसमें पुरुष–महिलाओं के प्रवास में लगभग समानता पायी गयी। सामान्यतः भारतीय परिवेश में विवाह के उपरांत स्त्रियों को पति के घर प्रवासित होना पड़ता है, जिसके कारण भारत में भारतीय प्रवास में महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से अधिक होता है, जो सामाजिक प्रवास की मात्रा और दिशा के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके विपरित निम्न आर्थिक स्तर एवं अशिक्षित परिवारों में पारिवारिक गतिशीलता अधिक होता है। चूंकि दल्ली–राजहरा खनन उद्योग के रूप में विकसित हुआ, जहाँ अकुशल श्रमिकों का प्रवास अधिक हुआ, जिसके कारण पारिवारिक गतिशीलता में पुरुषों की अधिकता रही। जबकि महिलाओं द्वारा पारिवारिक गतिशीलता, पारिवारिक सदस्य होने के नाते हुई। नगर में उच्च शैक्षणिक संस्थान की कमी के कारण शैक्षणिक गतिशीलता में न्यूनतः रही।

संदर्भ सूची

1. Davis, k. (1951): *The population of India and Pakistan,* Princeton University Press, Princeton.
2. Mehta, S. (1967): "India's Rural Female Working Force and its Occupational Structure – Geographical Analysis", *The Indian Geogerpher* , Vol.1 ,No. 1&2.
3. Lee, E. S. (1970): "A Theorgy of Migration, " *in Popution Geography –A Reader,* edited by G.J. Demko and others , McGraw-Hill Book Co., New Yark.
4. Davis, k. (1974) : " The Migrations of Human Populations, "*Scientific Americans,* Vol. 231 (3) , pp.93-105.
5. Desai, P. B. (1971): *Demography of India* , New Delhi, pp. 314-32.
6. Gupta, Kamla (1990): Status of Women and Migration" *paper presented in all India seminar on The status of women and Demographic change in india* , Oct .11-13,1990,11PS, Bombay.

7ण शर्मा, सरला (2002): "औद्योगिक नगरों में जनसंख्या आप्रवास" छत्तीसगढ़ राज्य के भिलाई एवं कोरबा नगरों के विशेष संदर्भ में, प्रकाशक पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) पृष्ठ 29–35।

8ण चांदना,आर.सी. (2017):"जनसंख्या भूगोल", कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली पृष्ठ 295–303।

9ण वर्मा, ओमकुमारी (2017): राजनांदगांव एवं कबीरधाम जिले से अल्पकालिक ग्रामीण उत्प्रवासः एक सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण, प्रकाशक पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) पृष्ठ 113–136।

10ण पटेल, यतिनंदिनी (2017): कोरबा नगर में आप्रवासीय कार्यशील महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता का भौगोलिक अध्ययन, प्रकाशक पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) पृष्ठ 39–60।

11ण चांदना, आर.सी. (2023): "जनसंख्या भूगोल भाग– II ",कल्याणी पब्लिशर्स ,नई दिल्ली पृष्ठ 169–173।

12ण तिवारी, राम कुमार (2023): "जनसंख्या भूगोल", प्रवालिका पब्लिकेशन्स युनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज पृष्ठ 159–196।